

Karnataka School Examination and Assessment Board.

TIPUC Mid Term Examination Oct. 2025

Subject : Hindi (03).

Q.N No.	2005 'क'	Marks.	
I अ.			
1.	i) सुजान गस्ती	1	
2.	iv) भिक्षुक	1	
3.	ii) गंगा मैया	1	
4.	iv) शीला अग्रवाल	1	
5.	iii) मुश्काना	1	
6.	i) गस्ती	1	
7.	iv) मानवता	1	
8.	i) घर	1	
9.	iii) वेशगढ़	1	
10.	ii) उपेन्द्रनाथ भिक्षुक	1	
आ)			
11.	दर्द	1	
12.	सत्य	1	
13.	सेवा	1	
14.	निर्णय	1	
15.	सम्मान	1	
इ)			
16.	a) फूल न समाना	iii) अल्पाधिक खुश होना	1
	b) नाम जगाना	iv) कीर्ति पाना	1
	c) पोल खुलना	i) रहस्य प्रकट होना	1
	d) दादश बांधना	vi) हिम्मत बढ़ाना	1
	e) नींव डालना	ii) आरंभ करना	1

17. 'सुजान भगत' पाठ में ग्राम्य जीवन से जुड़े एक किसान के परिवार से संबंधित वर्णन है। सुजान भगत का अपने ही घर में अनादर होने लगा। सुजान के हाथों से धीरे-धीरे कई अधिकार धीमे जाने लगे। गाँव भर में सुजान का मान सम्मान बढ़ता था और घर में घटता था। वह अब घर का स्वामी नहीं, मंदिर का देवता था। एक बार एक मिश्रमंगा (मिश्रक) द्वार पर आया तो घर के किसी ने उसे भीख नहीं दिया तो स्वयं सुजान छबड़ी में जो भण्डर देने जाने लगा तो भौला ने उसे रोका और निंदा की। फिर भी सुजान ने कुछ नहीं कहा। बुलाकी भी अपने बैयों का पशु लेती थी। इस प्रकार घर में सुजान का अनादर हुआ।

18. 'गंगा मैया से साक्षात्कार' पाठ में भव्यचार एवं गंदे गाँव जैसी ज्वलंत समस्याओं को उजागर किया गया है। समाज में प्रदूषण की समस्या है जो दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। चारित्र्य का संकट भी है। सेवा करने से चरित्र बनता है। लेकिन अब सेवा प्राप्त करना ही उद्देश्य है। लोग समझते हैं कि वे कैसे भी कर्म करें गंगा उन्हें तार देगी। महंगाई, रिश्तावारी और पाशविकता बढ़ती जा रही है। धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। लोग किसी असीत अधिकार, धन, वैभव और सम्मान के लिए लड़ रहे हैं। पशु-पक्षी भी मनुष्य के कुकर्मों पर हंस रहे हैं। हमारे समाज में ये समस्याएँ हैं।

19. 'कर्तव्य और सत्यता' पाठ में कर्तव्यों के प्रति जागरूकता को उजागर किया गया है। धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक अड़चन चित्त की चंचलता, उद्देश्य की अस्थिरता और मन की निर्बलता से आती है। मनुष्य के कर्तव्य मार्ग में एक ओर तो भले और बुरे कर्मों का ज्ञान और दूसरी ओर आलस्य और स्वाधिपरता रहती है। मनुष्य को मन इन दोनों के बीच पड़ा रहता है। यदि इसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपने धर्म का पालन करता है। यदि मन दुविधा में पड़ा रहा तो स्वाधिपरता निश्चय उसे आ धौंरेगी और उसका चरित्र धुँसा के योग्य हो जाएगा। अतः धर्म-पालन के मार्ग में कई अड़चनें आती हैं।

मन्नू भंडारी की माँ उसके पिता के ठीक विपरीत थी। वे पढ़ी-लिखी नहीं थी। उनमें धरती से कुछ ज्यादा ही दैर्घ्य और सहनशक्ति थी। वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित प्रमादश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहन भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं, केवल दिया ही दिया है।

११. संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य-गौरव' में संकलित 'सुजान भगत' से लिया गया है। इस कहानी के लेखक 'सुंशी प्रेमचंद' हैं। प्रस्तुत वाक्य सुजान ने मिश्रु से कहा है।

स्पष्टीकरण: सुजान भगत का अधिकार फिर से वापस मिल गया था। उसने कड़ी मेहनत से काकी फसल उपजायी। चैत का महीना था। सुजान भगत टोकरे में अनाज भर भर के दे रहा था और उसके दोनों लड़के घर में अनाज रख रहे थे। उस समय भारत-मिश्रु सुजान भगत को चारों ओर से घेरे हुए थे। उनमें वह भी एक मिश्रु था, जो आज से आठ महीने पहले सुजान भगत के द्वार से निशान होकर लौट गया था। सुजान भगत ने उसे पहचान लिया और उसे पूछा- आज कहीं-कहीं चक्कर लगाकर आया हो। मिश्रु ने कहा कि वह सबसे पहले सुजान ही के पास आया है। भगत ने उसे जितना अनाज उठाकर ले जा सकते हो ले जाने दे लिया कहा। 2

१२. संदर्भ: प्रस्तुत अवतरण 'कलीक और सत्यता' पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं। कलीक के मूल्य को दर्शाते हुए व्याय पूर्वक कलीक को निभाना चाहिए। इस प्रकार व्याय और कलीक के धारिक संबंध को दर्शाया गया है।

स्पष्टीकरण: डॉ. श्यामसुन्दर दास कहते हैं कि कलीक कृषा हम लोगों का परम धर्म है। संसार में मनुष्य का जीवन कलीकों से भरा हुआ है। घर में, पारिवारिक सदस्यों के बीच और समाज में मित्रों, पड़ोसियों और पूजाओं के बीच मनुष्य को अपना कलीक निभाना पड़ता है। समाज के प्रति देश के प्रति अच्छा कलीक निभाने से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कलीक करना व्याय है निभाना है। ऐसे सामाजिक व्याय को समझने पर, हम से कलीक निभाना सकते हैं। 2

23. सौंदर्य: उक्त वाक्य 'गंगा मैया से साक्षात्कार' पाठ से लिया गया है। लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने देश के राजनैतिक कलुषित वातावरण को दर्शाया है।
 स्पष्टीकरण: गंगा मैया देश के राजनैतिक कलुषित वातावरण का वर्णन करते हुए कहती हैं - समाज में अनेक समस्याएँ हैं। इसमें राजनीति के क्षेत्र में दल से दल लड़ता रहता है। इन सबका कारण है - कुर्सी के लिए झगड़ा है। लेखक कहते हैं बाजार में खूब कुर्सियाँ उपलब्ध हैं, सस्ती और मंहगी से मंहगी। कुर्सी का तात्पर्य लेखक को स्पष्ट करते हुए गंगा मैया कहती हैं - कुर्सी से मेरा मतलब शक्ति है और शक्ति माने वैभव, धन, सम्मान कीर्ति आदि। एक बार जबान पर इसका चस्का लग गया तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता। 2

24. सौंदर्य: इस गद्यांश को मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' से लिया गया है। डॉ. अंबालाल से मन्नू की तारीफ़ सुनकर मन्नू के पिता का प्रसन्न होना और मन्नू पर गर्व करने का भाव दर्शाया गया है।
 स्पष्टीकरण: आजाद हिन्द फौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलेज, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। शाम को अजमेर के पूरे विद्यार्थी बग के सम्बोधित करते हुए मन्नू भंडारी ने एक बड़ा भाषण दिया। भंडारी जी के अंतरंग मित्र डॉ. अंबालाल ने गनिजोशी से मन्नू का स्वागत किया। वे चौपड़ पर मन्नू का भाषण सुनकर सीधा भंडारी जी को बधाई देने आ गए। डॉ. अंबालाल ने मन्नू की खूब प्रशंसा करते हुए बधाई दी। वे बोलते जा रहे थे। और पिताजी के चेहरे का संतोष धीरे-धीरे गर्व में बदलता जा रहा था। 2

25. सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं - गोपियों ने यमुना नदी तट पर नंद बाबा के पुत्र श्रीकृष्ण को देख लिया। वे मोर मुकुट पहने हुए हैं। कानों में मकराक्षत मुष्क धारण किए हुए हैं। पीले रंग के रेशमी वस्त्र पहने हुए हैं। उनके तन पर चन्दन-लेप है। वे अत्यंत शोभायमान हैं। उनके दर्शन मात्र से गोपिकाएँ तृप्त हुई। स्वयं की तपन बुझ गई। वे सुन्दरियाँ प्रेम-मग्न हो गईं। उनका स्वयं भर आया। 3

26) रहीम जी चिंता और चिंता के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि चिंता केवल निजी शरीर जलाती है। लेकिन चिंता जीवित मनुष्य को निरंतर जलाती रहती है। चिंता, चिंता से भी अधिक दुःख देती है। चिंता से व्यक्ति हर पल तड़पता रहता है। इसी कारण रहीम जी कहते हैं कि चिंता की तुलना में चिंता के परिणाम अधिक दूरगामी और विनाशकारी होते हैं। किसी भी समस्या का परिणाम चिंता नहीं होनी चाहिए बल्कि चिंता का धैर्य से सामना कर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। 3

27) महादेवी वमा कहती हैं कि जीवन में सुख और दुःख दोनों का समान महत्व है, ये जीवन के अभिन्न अंग हैं। जिस तरह मेघ की सार्थकता पिछला कर बरसने में है, जग को आनंद देने में है, उसी प्रकार जीवन की सार्थकता परिस्थितियों का उठ कर सामना करने में है। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह जीवन को उसकी परिपूर्णता में स्वीकार करें। 3

28) 'गहने' कविता में माँ की ममता तथा बेटी की भावुकता का मर्मस्पर्शी वर्णन है। माँ बेटी को गहने पहनाकर सुंदर दिखाना चाहती है। बेटी को गहने और रंगीन कपड़ों से अधिक माँ का मातृत्व महत्वपूर्ण लगता है। इसीलिए वह गहने पहनने के लिए मना करती है। वह कहती है कि माँ तुम ही मेरा गहना हो और मैं तुम्हारा गहना हूँ। इसका आशय व्यक्त करते हुए कवि कहते हैं कि माँ का मातृत्व बेटी के लिए असली गहने है। इनके समस्त अर्थ गहनों का कोई मूल्य नहीं है। 3

29) आधुनिक कविता कायर मत बन, के कवि नरेन्द्र शर्मा ने कवि ने मनुष्य को कायर न बनने का संदेश दिया है। कवि मानवता को अत्यधिक महत्व देते हुए दुष्टों के सामने आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं। यदि कोई मुझे युद्ध के लिए ललकारता है तो उसका मुँह तोड़ जवाब देना चाहिए। इसे दुश्मन को प्रेम केवल पर होना चाहिए नहीं तो उसे सनक सिखाना चाहिए। कवि के अनुसार यह जीवन युद्ध भूमि के समान है। हमें जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 3

इसलिए हमें कायरता को छोड़कर वीरता, साहस और
निडरता से दुश्मन का सामना करना चाहिए।

30) श्लोक: इस पद्यांश को संत रेदास द्वारा रचित
'रेदासवाणी' से लिया गया है। इसमें रेदास जी भक्त
और भगवान के बीच के संबंध का वर्णन करते हैं।

भावार्थ: भगवान और भक्त के बीच के संबंध को स्पष्ट
करते हुए रेदास जी कहते हैं कि भगवान के बिना भक्त
का कोई अस्तित्व नहीं है। प्रभु जी यदि दीप हैं तो
भक्त वनिजा के समान, दोनों मिलकर प्रकाश फैलाते
हैं। प्रभु जी यदि मोती हैं तो भक्त धागा है, दोनों
मिलकर सुंदर हार बन जाते हैं। दोनों का मिलन सोने
के सुहागे के समान है।

विशेष: रेदास प्रभु जी को स्वामी और अपने आपको
उनका दास या सेवक मानते हैं। रेदास जी की
दास्य भक्ति पुष्ट होती है।

1) रेदास जी भाषा सरल और सहज है।

31) पुस्तुत पद्यांश 'रहीम के दोहे' से लिया गया है। इस
कविता के कवि अब्दुरहीम खानखाना है। इस
दोहे में वाणी से होने वाले अनर्थों का वर्णन किया
गया है।

भावार्थ: इस संसार में शोर अनर्थों के लिए बिना
साचे-समझे किए गए व्यर्थ-प्रलाप ही कारण है। बातों
से बिगड़ी हुई बात बन भी सकती है या बना-बनाया
काम बिगड़ भी सकता है। रहीम इसी को स्पष्ट करते
हुए कहते हैं कि जिह्वा (जीभ) पगली है, स्वर्ग
पाताल की आसपास की सभी बातें करती है। कुछ
उल्टी-सीधी बातें कहकर आराम से मुँह के अंदर
पहुँच जाती है लेकिन उसका परिणाम सिर को झेलना
पड़ता है। जूतों की मार सिर को सखी पड़ती है। जिह्वा
को काबू में रखना चाहिए, नहीं तो उसका परिणाम
भुगतना पड़ता है।

विशेष: - i) मधुर वाणी तथा विवेक बुद्धि के महत्व
को दर्शाया गया है।

ii) भाषा सरल - खड़ी बोली का प्रयोग है।

31) शेर्षा: पुस्तुत पद्योश 'अधिका' कविता से लिया गया है। कविनी महादेवी वमा जीवन में वेदना के महत्व को दर्शाने हुए, वेदना मनुष्य को मजबूत बनाती है और विपन्न परिस्थिति से डट कर मुड़ावला करना सिखाती है।

भावार्थ: महादेवी वमा कहती है कि अमरलोक में वेदना और अवसाद (दुःख) नहीं है। ऐसे लोक में दुःख, दर्द और ईर्ष्या की अनुभूति ही नहीं है। ऐसी स्थिति में मनुष्य कभी किसीका हमदर्द नहीं बन सकता। फल में किसी का शाप नहीं दे सकता। अमरलोक में सुख और दुःख का कोई महत्व नहीं है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर भी नहीं मिलेगा। इस लोक से भूलोक (मनुष्य) लोक हजार गुना बेहतर है। क्योंकि धरती लोक मनुष्य एक-दूसरे के वेदना, दुःख दर्द को समझ सकता है। संकट काल में एक मनुष्य - दूसरे मनुष्य की साहायता करता है।

विशेष: - कविनी जीवन में वेदना की अनुभूति के महत्व को दर्शाती है। अथवा

31) शेर्षा: उपरोक्त पंक्तियों हमारी पाठ्यपुस्तक 'शास्त्रिय गौरव' में संकलित कविता 'कायर मत बन' से लिया गया है। इसके रचयिता नरेन्द्र शर्मा हैं।

भावार्थ: - 'कायर मत बन' कविता इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि अगर कोई दुष्ट, क्रूर मनुष्य तुमसे टक्कर लेने या युद्ध के लिए ललकारता है, तो उसकी ताकद से डरकर तूम पीछे मत हटना, पीठ दिखाकर भागना मत। संसार में कई महापुरुष और स्त्रियों ने अपने पैम और सेवाभाव से दुष्टों को भी जीत लिया है। क्योंकि हिंसा का जवान प्रतिहिंसा तो नहीं है। किन्तु कायरता तो उससे भी अधिक अपवित्र है।

इसलिए कवि नरेंद्र शर्मा जी कहते हैं कि मनुष्य कुछ भी बन सकता है लेकिन उसे कायर नहीं बनना चाहिए।

विशेष:- भाषा सहज, सरल और प्रवाहमय है।

'खण्ड ग'

32) 'सूखी डाली' एकांकी के लेखक उपेन्द्रनाथ अश्वक हैं। इसमें सम्मिलित परिवार का चित्रण किया गया है। दादाजी अपने परिवार को एक बड़े बरगद के पेड़ के समान मानते हैं। अगर पेड़ की एक भी डाली टूट कर अलग हो जाए तो फिर चाहे उसे कितना भी पानी दो उसमें सरसता नहीं आ सकती।

दादाजी को पता चलता है कि पेरेश अलग होनेवाला है, तो वे परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि कोई भी छोटी बड़ का अनादर न करे। परिवार में छोटी बड़ का व्यक्तित्व दब कर रह गया है क्योंकि वह केवल छोटी बड़ से गयी है। दादाजी के अनुसार बड़ा वास्तव में उम्र या दर्जे से नहीं होता। बड़ा व्यक्ति तो बुद्धि और योग्यता से होता है। छोटी बड़ उम्र में न सही, अबल में हम सबसे निश्चय ही बड़ी हैं। हमें उसका लाभ उठाना चाहिए। उससे परामर्श लें, उसका काम भी आपस में बाँट लो और उसे पहले लिखने का समय दो। बला को तब तक हँसी का निशाना बनाना ठीक नहीं, जब तक वह पूर्णतया इस घर का अंग न बन जायें। दादाजी यही आकांक्षा है कि पूरा परिवार एक-साथ हँसी-भूरी रहे।

अथवा

'सूखी डाली' एकांकी के लेखक उपेन्द्रनाथ अश्वक हैं। दादाजी परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि कोई बला का अनादर न करे और उसे वही सम्मान मिले जो उसे अपने घर में मिलता था।

इसके उपरांत सभी का बस्ताव बदल जाता है। बेला को लगता है कि वह अपारिचितों के परिवार में आ गई है। उसके जाने पर सभी लोग खड़े हो जाते हैं। उसके सामने कोई हँसता नहीं। कोई अधिक समय तक बात नहीं करता। सब इससे ऐसे डरते हैं जैसे मुर्गी के बच्चे बाज़ से डरते हैं। उसे किसी भी काम को हाथ लगाने नहीं देते। परिवार के सभी सदस्य बेला का आदर करते हैं। परिवारवालों के बदले व्यवहार के कारण, उन्हें समझने में असमर्थ बेला अपने मायरे जाना चाहती थी।

5

33) 'प्रतिशोध' द्रकॉपी के लेखक रामकुमार वर्मा हैं। भारवि के पिता श्रीधर श्लोक को पढ़ते हैं और पत्नी सुशीला से उसे सुनने के लिए कहते हैं। तब सुशीला कहती है कि वह शून्य रही है पर उसे भारवि की याद आ रही है। श्रीधर का कहना था कि भारवि आ जायगा मगर उसके लिए उपनिषद् नहीं छोड़ना चाहिए। भारवि कवि है कवि समय पर शासन करता है। तब सुशीला पूछती है कि क्या अब भारवि कवि बनकर मेरा पुत्र नहीं रहा। सुशीला पुत्र की व्याप्ति में व्याकुल हो रही थी। श्रीधर उसे शास्त्र का चिन्तन करने के लिए कहते हैं। वे कहते हैं। भारवि मुख्य है और तुम सुशीला कहती है 'यादों' पुत्र के लिए माँ की ममता मुखता है, तो ऐसी मुखता सदैव ही मुझ में बनी रहे। इस प्रकार से भारवि के घर न लौटने के कारण मान्ता-पिता से संवेदनशील संवाद बना रहता है।

4

अथवा

'प्रतिशोध' द्रकॉपी के द्रकॉपीकार रामकुमार वर्मा हैं। शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में सोचा कि अगर इसी तरह से होता रहा तो उसका अहंकार बढ़ता ही जायगा। उसे अपनी विद्वता का दमंड हो गया है। उसका गर्व सीमा का अतिक्रमण कर रहा है। उन्होंने उसे ताड़ना दी और वह भी उग्र रूप से। उन्होंने भारवि से कहा कि तू महामूर्ख है, दंभी है, अज्ञानी है। श्रीधर अच्छी तरह से जानते थे कि दमंड अथवा अहंकार उन्नति में बाधक है। व्यक्ति को इससे दूर ही रहना चाहिए तभी वह अपने जीवन में आगे बढ़ सकता है।

4

34)

34) i) यह किताब किसकी है।

ii) तुम अपना काम करो।

iii) रोटन से पुष्प।

35) मैं कहानी लिखूँगा।।

ii) आत्मानन्द देश की सेवा करता था।

iii) शीला खाता बनाती है।

3

36)

i) केदारिन

ii) मोरबी

37)

i) सत्यवादी

ii) अपरिचित

38)

i) $\overline{\text{सफल}} = \text{अ} + \overline{\text{सफल}} = \text{असफल}$

$\underline{3प} + \overline{कार} = 3प\overline{कार}$, $\underline{प्र} + \overline{कार} = \underline{प्र}\overline{कार}$,

$$\text{प्रति} + \text{कार} = \text{प्रतिकार}$$

39) धन + वान = धनवान

i) $\overline{20200477} = \overline{2020047}$

2) गोमती नदी

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

2. वास्तविक जीवन में प्रयोग के लिए उपयुक्त है।

[illegible]

- 40) i) भारत को विश्व सभ्यता का जनक कहा जाता है। 1
 ii) प्लय के बाद सृष्टि की रचना हुई। 1
 iii) अपने देवर्षों और समृद्धि के कारण भारत को
 खोने की जिडिया कहा जाता है। 1
 iv) सभी प्रकार की कलाओं और विद्याओं का शुभारंभ
 भारत भूमि पर हुआ है। 1

आ)

41) मनोरंजन के आधुनिक साधन (निबंध)

- 1) भूमिका 2) मनोरंजन का अर्थ 3) मनोरंजन की
 आवश्यकता 4) प्राचीन काल में मनोरंजन के साधन 4
 5) आधुनिक काल में मनोरंजन के साधन 6) मनोरंजन
 और मानव जीवन का अटूट संबंध 7) उपसंहार

अथवा

पत्र-लेखन : औपचारिक पत्र :

प्रेषक : पत्र लिखनेवाले का पता एवं दिनांक ।

सेवा में : पत्र पानेवाले का पता

विषय ।

संगोद्यन ।

पत्र का क्लेवर

समापन

4

42)

i) भारत में अनेक भाषाएँ हैं। 1

ii) भारत कृषि प्रधान देश है। 1

iii) कठिन परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती। 1

: 0000 :